गलती का एहसास

राहुल, विवेक, विनोद तीनो बहुत ही गहरे मित्र थे. तीनों की दोस्ती की चर्चा पुरे गांव के साथ-साथ दूसरों गांव में होती थी. तीनों गहरे मित्र के साथ ही निठल्ले भी थे.

कुछ भी काम धंधा नहीं करते थे...तीनों की आदत एक बराबर थी...यूँ कह लो कि तीनों एक दुसरे से बढ़कर थे.इसीलिए इनकी खूब जमती थी.एक दिन तीनों दोस्त मेला देखने गए.

मेले से लौटने काफी रात हो गयी...लेकिन इन्हें कोई भी फर्क नहीं था...ये तीनों अपनी ही मस्ती में चले आ रहे थे. इन्हें विश्वास था कि इनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन शायद आज होनी को कुछ और ही मंजूर था.

"तुम तीनों रुको...इतनी रात को कहाँ जा रहे हो" एक कड़क आवाज़ गूंजी. तीनो ठिठक गए और पीछे मुड़कर देखा तो ७ लोग खड़े थे...कुछ ही देर में उन लोगों ने इन तीनों को घेर लिया.

ये लोग तीन...वो लोग ७ ....माहौल को देखते हुए विवेक ने डरने का अभिनय करते हुए सारी बात बता दी और कहा कि हमें छोड़ दो...जाने दो. ऐसे कैसे जाने दूं..तुम लोगों के पास जो कुछ भी है तुरंत निकालो...उन ७ आदमियों से एक ने गरज कर कहा. लेकिन हमारे पास तो कुछ नहीं है....आपको विश्वास ना हो तो आप तलासी ले सकते हो.....विनोद ने कहा.

चुप....एकदम चुप...मुझे पता है .....तुम भिखारियों के पास कुछ नहीं है....तुम्हे यह पैकेट गाँव के लास्ट में पीपल के पेड़ के निचे रखना है.,,,उन ७ में से एक आदमी ने कहा.

ले..लेकिन इनमें क्या है....विनोद हकलाते हुए कहा. सवाल नहीं.....तुम्हे सिर्फ यह पैकेट वहाँ रखना है....और हाँ कोई चालाकी नहीं....मुझे तुम लोगों के सारे काले कारनामे पता है....उनमे से एक ने कहा.

नहीं..हम नहीं रखेंगे.....पहले बताओ इसमें क्या है...विवेक ने थोड़ी ढीठता से कहा. ठीक है फिर...आज तुम लोग मेला गए थे न...लेकिन मेले में तुमने क्या किया उसका नमूना दिखाऊं ..... ओये दिखा तो फोटो इसे....उन ७ में से एक ने दुसरे को कहा.

कहते ही मोबाइल से फोटो दिखाई देने लगे....कि किस तरह ये तीनों लोगों को परेशान कर रहे थे...कुछ सामन भी चुरा रहे थे .....अब तो इन तीनों के पैरों तले जमीन खिसक गयी....मरता क्या न करता...उन्होंने हां कह दिया और पैकेट्स लेकर चल दिए.

आज ये तीनों बहुत ही बुरी तरह फंस गए थे..... इनका दिमाग **चकरघिन्नी** हो गया था...इनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था...ये तीनों चुपचाप चल रहे थे...कि इतने में पुलिस की गाडी आती दिखी....अब तो बेचारे और भी बुरी तरह फंस गए.....कुछ ही पल में पुलिस की गाडी इनके पास आकर रुकी.....ये तीनों थर-थर कापने लगे.

कहां से आ रहे हो तुम लोग..कौन सा गांव है तुम लोग का....इतनी रात को कहा गए थे....इन पैकेट्स में क्या है.....पुलिस सिपाही की रौबदार आवाज़ में इतने सारे सवाल सुनकर तीनों की बोलती बंद हो गयी.

क..क..कुछ नहीं साहेब..बस थोड़ा सामान है...राहुल ने हकलाते हुए कहा. दिखाओ...पैकेट्स दिखाओ कहकर सिपाही ने पैकेट्स उनके हाथ से छीन लिया....अब तो इनकी जान आफत में आ गयी....अब जैसे ही सिपाही ने पैकेट्स को तो सभी अवाक रह गए....उन पैकेट्स में मिट्टी थी.

अब सिपाही गुस्सा हो गया.....कहा तुम लोग पुलिस का मजाक उडाते हो. रहने दो साहेब....इनके किये का दंड इन्हें मिल गया है....अब यह अवश्य ही सुधर जायेंगे....इन पैकेट्स को हम लोग ही दिये थे....इन लोगों की रात भर घुमने की आदत छुड़ाने के लिए.

इन्हें शर्म नहीं आती ये **निठल्लों** जैसे घुमते रहे हैं.....इन तीनों लोग राहूल, विवेक और विनोद ने जब पीछे मुड़कर देखा तो वही ७ लोग खड़े थे...लेकिन अब सभी के चेहरे सामने थे.

उनमें से एक **सरपंच** और इन तीनों के पिताओं के अलावा गाँव के कुछ लोग थे....इन तीनों को अपनी गलती का एहसास हो गया....तीनों ने आगे से **Hard Work** करके कमाने की कसम खायी .फिर पुलिस ने भी इन्हीं हिदायत देकर छोड़ दिया.....अब ये तीनों Hard Work करके कमाने लगे...इन्हें सबक मिल गया था.

सकारात्मक सोच

Life में हमें कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है और आप Positive thinking पर कहानी पढ रहे है. सकारात्मक सोच से आप जीवन की तमाम परेशानियों से लड़ सकते है.

अगर आप हमेशा Negative thoughts के बारे में सोचेगें तो हर काम आपको कठिन ही लगेगा. एक कहावत है न .. .... "जैसी चाह वैसी राह"

बात बहुत पुरानी है. एक **संत** अपने शिष्यो के साथ एक जंगल से कहीं जा रहे थे. अचानक उन्हें प्यास लगी, वो पानी की तलाश में आगे बढ़ने लगे.

आगे चलने पर उन्हें एक तालाब दिखाई दिया. मीठी -मीठी फूलों की सुगंध.... धीमी गति से बहती हवा... चिड़ियो की चहचहाहट... बहुत ही मनोरम दृश्य था.

संत ने अपने शिष्यो से कहा कि हम थक गये हैं ,यहा बहुत ही **मनोरम वातावरण** है. हम कुछ देर आराम करेंगें, फिर गंतव्य को प्रस्थान करेंगें. संत और उनके शिष्य थोडा आराम करने के उद्देश्य से वहा बैठ कर प्रकृति का आनंद ले रहे होते है, कि अचानक से देखते हैं कि एक मछुआरा मछलियाँ पकड़ने आता है.

संत बडे ध्यान से उसकी क्रिया को देखते हैं. फिर अपने शिष्यो से कहते हैं कि देखो कैसे मछुआरे के जाल में कुछ मछलियाँ एकदम निढाल हैं.... कुछ मछलियाँ छटपटाते हुये निकलने का प्रयास कर रही हैं और कुछ सफल भी हो रही हैं.

फिर संत ने शिष्यो से पूछा कि इसका जीवन में क्या मतलब है ? शिष्य एक दूसरे को देखने लगे. तब संत बोले मैं बताता हूं..... मनुष्य भी ठीक ऐसे ही होते है.

कुछ मनुष्य होते हैं जो सोच लेते है कि अब कुछ हो ही नहीं सकता... सब कुछ खत्म हो गया है.. और शान्त होकर बैठ जाते हैं. दूसरे होते हैं जो जोश में आकर प्रयास तो करते हैं लेकिन फिर शान्त होकर बैठ जाते हैं जिससे उनका भी पतन हो जाता है.

लेकिन इसके विपरीत जो तीसरे होते हैं वे निरंतर प्रयास करते हैं और जीवन में सफल होते हैं. वह सकारात्मक सोच के लोग होते हैं .तो हमें निरंतर प्रयास करना चाहिए. सकारात्मक होना चाहिए. सकारात्मक सोच रखनी चाहिए.

बुद्धिमान सियार

एक जंगल में एक **शेर** रहता था.... उम्र बढ़ जाने की वजह से उसे कही आने जाने में परेशानी होती थी...जिससे वह शिकार नहीं कर पाता था... छोटे छोटे जानवर भी उसके आगे से गुज़र जाते लेकिन वह कुछ नहीं कर पाता.

वह भूख से व्याकुल होने लगा... तभी उसे एक उपाय सूझा... उसने पूरे जंगल में घोषणा करवा दी कि इतने दिनो तक वह तप कर रहा था... इसीलिए उसने किसी जानवर को नहीं मारा... वह भी तब जब जानवर उसके सामने से गुजर गये.... लेकिन अब उसका तप पुर्ण हो गया है... उसके पास **जादुई शक्तियां** आ गयी हैं .

सो जंगल से एक जानवर रोज उसकी गुफा में आ जाये.... अन्यथा वह सभी जानवरों को जादुई शक्ति से मार देगा... लेकिन सिर्फ छोटे जानवर ही आयें... बड़े जानवरों को ना खाने की शपथ ली है.

उसके इस फरमान से जंगल में कोलाहल मच गया... एक तो जंगल का राजा और जादुई शक्ति से उसके और बलशाली होने की खबर से जंगल में अफरा तफरी का माहौल हो गया.

बड़े जानवर तो इस बात से खुश हो गये कि जंगल के राजा शेर ने उन्हें ना खाने की शपथ ली है....लेकिन छोटे जानवरो की शामत आ गयी... इस परिस्थिति को देख छोटे जानवर पलायन करने लगे.

उनके पलायन की खबर सुनते ही सारे बड़े जानवरो ने तत्काल एक सभा का आयोजन किया..... आयोजन में एकमत से पारित किया गया बड़े जानवर स्वयं छोटे जानवरों को पकड़ कर राजा शेर तक पहुंचायेंगे.... नहीं तो छोटे

जानवरों के पलायन के बाद राजा शेर के क्रोध का प्रकोप हम बड़े जानवरो को सहना पड़ सकता है....साथ ही जान से भी हाथ धोना पड़ सकता है.

अब इस डर से बड़े जानवर स्वयं छोटे जानवरो को पकड़ कर शेर तक पहुंचाने लगे.... शेर की योजना काम कर गयी... **वह मजे से बिना मेहनत किये रोज जानवरो को मार कर खाने लगा और जानवरो के छोटे होने से उसे कोई परेशानी नही होती थी.... वह खूब मोटा ताजा हो गया.**

लेकिन कहते हैं न सबका दिन आता है. अब एक दिन एक सियार का नम्बर आया... वह बहुत ही **बुद्धिमान सियार** था... जब एक बड़ा जानवर उसे शेर के पास ले जा रहा था.. तो उस बुद्धिमान सियार ने एक बहाना बनाया.

उसने उस जानवर से कहा कि अब तो मेरा मरना निश्चित है... और हर मरने वाले की **आखिरी ख़्वाहिश** पूरी की जाती है... सो आपसे निवेदन है कि मुझे थोड़ा अपना पेट भर लेने दिजीये. उसके बाद तो भोजन कभी नसीब में नही रहेगा... और महाराज शेर भी जब मुझे खायेंगे... तो बढ़िया स्वाद मिलेगा... वह जानवर मान गया.

सियार आराम से भोजन करने लगा और काफी देर बाद वापस आया... इधर देर हो जाने की वजह से शेर भूख से व्याकुल हो उठा था... उसे रोज ताजे खाने की आदत थी सो वह गुस्से में दहाड़ लगाने लगा.

जब बड़ा जानवर सियार के साथ वहां पहुंचा तो शेर की दहाड़ से दूर जा छुपा...सियार को गुफा के द्वार पर खड़ा देख शेर ने क्रोध से कहा.. दुष्ट सियार कहा रह गया था... आने में इतनी देर क्यों लगा दी... आज मैं तुझे ठीक वैसे ही तड़पा कर खाऊंगा जैसे मैं भूख से तड़पा हूं.

तब सियार ने विनम्रता से कहा हे महाराज क्षमा करें... मैं समय से आ रहा था... भला कोई आपके आदेश की अवहेलना कर सकता है भला.... वह तो रास्ते में पड़ने वाले कुये के पास एक नया शेर आया है.

उसने मुझे रोक लिया... उसने गुस्से में से पूछा कहा जा रहा है... तो मेरे साथ वाले बड़े जानवर ने सारी बात बता दी... इसपर वह शेर बहोत क्रोधित हो गया.. और उसने बड़े जानवर को वहीं मार डाला... आप देख सकते हो कि मेरे साथ कोई बड़ा जानवर नही है... जब शेर ने बाहर झांककर देखा तो बात सही थी.

सियार ने गरम लोहे पर फिर हथौड़ा मारा... उसने कहा महाराज कल से कोई जानवर यहा नही आयेगा... उसने मुझसे कहा कि जाकर कह दे कि कल से जानवरो को मै खाऊंगा... महाराज आज मुझे खाकर भूक शांत कर लें कल से तो आपके नसीब में कुछ नहीं है.

इसपर शेर ने क्रोध में भरकर कही कि चल बता कहा है वह शेर आज मै सर्वप्रथम उसे मारुंगा... तब मेरा भूक शांत होगी... शेर और सियार दोनो कूयें की तरफ चल दिये... उन्हें साथ जाता देख झाड़ियों में छुपे हुये बड़े जानवर को बड़ा आश्चर्य हुआ... वह भी धीरे धीरे छुपकर उनके पीछे चल दिया.

कूयें पर पहुंच कर सियार ने कहा महाराज इसी कूये मे बैठा है वह शेर.. आप कूयें में दहाड़ लगाइये... तब वह आयेगा.... जैसे ही शेर ने कूयें में दहाड़ लगायी... उसकी परछाई ने भी दहाड़ लगायी... इसपर शेर को गुस्सा आ गया और उसने कूयें में छलाँग लगा दी.... छपाक और खेल ख़त्म.

वह कूयें मे से बचाने की गुहार लगाता रहा और कुछ देर बाद आवाज़ बंद हो गयी.... इधर बड़े जानवर ने जंगल में आकर सारी कहानी बता दी... सारे वन में उत्सव मनाया जाने लगा....और सियार का खूब स्वागत सत्कार किया गया.... इस तरह बुद्धिमान सियार ने खुद के साथ कइयों की जान बचा ली.

1- पाप का घड़ा एक ना एक दिन भरता ही है, क्योंकि शेर ने बहुत पाप कर दिया था।

2- चालाकी से किये कार्य आपको मुसीबत से बचा सकते हैं, जैसा सियार ने किया।

3- घमंड बहुत ही हानिकारक होता है। शेर को अपने बल पर घमंड हो गया था।